P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# डोकलाम विवाद और भारत–चीन संबंध


**सारांश**

भारत और चीन एशिया महाद्वीप की उभरती हुई शाक्तियाँ हैं। दोनों देशों बीच सांस्कृतिक व व्यापारिक संबंध प्राचीनकाल से रहे हैं। परन्तु दोनों राष्ट्रों के मध्य निरन्तर सीमा विवाद मौजूद रहा मौजूदा सीमा विवाद भारत भूटान और चीन सीमा के मिलान बिन्दु से जुडा हुआ है। सिक्किम में भारतीय सीमा से सटा डोकलाम पठार है, जहाँ चीन सड़क बनाने पर आमदा है। यही डोकलाम विवाद था। डोकलाम विवाद, डोकलॉम में एक सड़क निर्माण को लेकर भारतीय सशंस्त्र बलों और चीन की पिपुल्स लिबरेशन आर्मी के बीच जारी सैन्य सीमा गातिरोध को संदर्भित करता है। 72 दिनों के बाद उक्त विवाद का कूटनीतिक समाधान हो गया और दोनों देशों की सेनाएँ विवादित क्षेत्र से पीछे आने लगी। प्रस्तुत शोध पत्र में डोकलाम विवाद के विविध पहलू पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है जैसे–डोकलाम विवाद है क्या, इसका भारत चीन संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ा। भारत ने किस तरह अपनी रणनीति द्वारा उक्त विवाद को सुलझाने का प्रयास किया। उक्त विवाद पर विश्व समुदाय का क्या दृष्टिकोण रहा और इसी संदर्भ में भारत चीन संबंधों को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

**विनिता कुमारी अग्रवाल**
शोध छात्रा,
राजनीति शास्त्र विभाग,
जय नारायण विश्वविद्यालय,
जोधपुर,राजस्थान,


**मुख्य शब्द :** डोकलेंग, ट्राई जंक्शन, सीमा, गतिरोध ।

**प्रस्तावना**

भारत और चीन विश्व की दो सबसे बड़ी उभरती शक्तियाँ है जहाँ चीन पिछले दो दशकों में भारी विकास के दम पर विश्व की सबसे बडी अर्थव्यवस्था बन गया है वही आने वाले दो दशक भारत के माने जा रहे हैं। भारत का विकास दर वर्तमान में चीन से काफी आगे है।

जहाँ दोनों देश विकास के क्षेत्र में आगे निकलने के लिए अग्रसित है, वही अन्य कई मामलों में दोनों के पक्ष समान और असमान भी है। दोनों देशों के बीच सीमा विवाद सदियों से चला आ रहा है इसके अलावा दोनों देश एशिया की सबसे बड़ी शक्ति बनने का भी सपना देख रहे है।

चीन 'वन बेल्ट वन रोड़' जैसी बडी परियोजनाओं के दम पर अपना दमखम दिखा रहा है, वही भारत अमेरिका और जापान जैसे देशों की सहायता से वैश्विक मुद्दों पर अपनी भूमिका बढ़ा रहा है।

हाल ही में भारत और चीन के बीच सीमा विवाद को लेकर रिश्तों में तल्खी बढ़ी है। मौजूदा सीमा विवाद भारत भूटान और चीन सीमा के मिलान बिन्दु से जुड़ा हुआ है। सिक्किम में भारतीय सीमा से सटा डोकलाम पठार है, जहाँ चीन सड़क बनाने पर आमदा है। डोकलाम पठार का कुछ हिस्सा भूटान में भी पड़ता है। भूटान में यह पठान 'डोकलाम' कहलाता है, जबकि चीन में 'डोंगलेंग' कहलाता है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य डोकलाम विवाद पर विचार करते हुये भारत व चीन के संबंधों में इसके परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करना है और भारत व चीन के मध्य विद्यमान सीमा संबंधी मुद्दों पर प्रकाश डालना है। इस विवाद ने इस बात को स्पष्ट किया कि चीन अब भी अपनी पुरानी साम्राज्यवादी नीति से ग्रस्त है और मौका पड़ते ही समय समय पर अपनी इस नीति को अंजाम देने का प्रयत्न करता है। गतिरोध के फलस्वरूप भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में खुद को जिम्मेदार, निर्णायक और विश्वसनीय अभिनेता के रूप में स्थापित किया है और भारत की कूटनीतिज्ञ कौशल की प्रभावशीलता दिखी।

डोकलाम सीमा विवाद को दोनों देशों की महत्वाकांक्षाओ और मजबूरियों के नजरिये से आंका जा रहा हैं जून 2017 को भूटान के आमंत्रण पर भारत की सेनाओं ने चीनी सैनिकों को भूटान की भूमि में घुसने से रोक दिया था, तब से जबकि भारत शांति वार्ता का प्रस्ताव दोहराता आ रहा था, चीन लगातार आक्रामक रूख बनाये हुए था।

**डोकलाम विवाद**

हाल ही के दिनों में 'डोकलाम विवाद' भारत चीन के मध्य सामरिक मुद्दा बनकर उभरा है। एशिया 'डोकलाम' पठार में चीन के साथ भारत के सैन्य गतिरोध के कारण वैश्विक राजनीतिक विमर्श का केन्द्र बिन्दु बन चुका है।

'डोकलाम का मुद्दा 2013 के डेपसांग और 2014 में चुमार में हुई घटनाओं से एक मामले में समान था। तीनों घटनाओं में चीन ने, सीमा पर ज्यादा जमीन कब्जाने के लिए 'जमीनी हकीकत' को बदलने की कोशिश की। डोकलाम की घटना में फर्क बस इतना था कि चीन यह हरकत भूटान की सीमा में घुसकर कर रहा था। इसके पीछे चीन की मंशा तीनों देशों की सीमा को एक नया आकार देकर अपना दबदबा बढ़ाने की थी। दूसरी तरफ भारत के लिए भी यह घटना इसलिए अलग थी कि उसे अपनी सुरक्षा चिंताओं की खातिर और भूटान की सीमा की रक्षा हेतु अपने सेना को तीसरे देश में भेजनी पड़ी।

डोकलाम एक सड़क निर्माण को लेकर भारतीय सशस्त्र बलों और चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के बीच जारी सैन्य सीमा गतिरोध को संदर्भित करता है। 18 जून, 2017 को इस गतिरोध की शुरूआत हुई, जब करीब 300 से 270 भारतीय सैनिक दो बुलडोजर्स के साथ भारत–चीन सीमा पार कर पीएलए को डोकलाम में सड़क बनाने से रोक दिया।

**ऐतिहासिक पृष्ठभूमि**

डोकलाम विवाद का मुख्य कारण उसकी अवस्थिति है। यह एक ट्राई जंक्शन है, जहाँ भारत, चीन और भूटान की सीमा मिलती है। दरसअल इस क्षेत्र को लेकर चीन भूटान के बीच में विवाद है। वर्तमान में यहाँ चीन का कब्जा है भूटान उस पर दावा करता है।

डोकलाम विवाद में भारत की ताजा भूमिका भारत–भूटान के बीच हुई रक्षा संधि की वजह से है। इस संधि के तहत् भूटान की रक्षा एवं विदेशी मामलों की जिम्मेदारी भारत की है। भूटान और भारत के बीच 1949 से ही परस्पर विश्वास और स्थायी दोस्ती का करीबी संबंध है। दोनों देशो के बीच सैन्य सहयोग का करार है।

2007 में भारत और भूटान द्वारा हस्ताक्षर किए गए मैत्री संधि के अनुच्छेद 2 में कहा गया है ''भूटान और भारत के बीच घनिष्ठ दोस्ती और सहयोग के संबंधो को ध्यान में रखते हुए, भूटान साम्राज्य की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार आपस में सहयोग करेगी और अपने राष्ट्रीय हितों से संबंधित मुद्दो पर एक दूसरे के साथ है।

ऐतिहासिक रूप से डोकलाम तिब्बत के यातुंग बाजार का हिस्सा था, यह भूटान और चीन के द्वारा दावा किया जाने वाला विवादित क्षेत्र है, डोकलाम भारतीय क्षेत्र के नाथुला दर्रे से 15 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण पूर्व में अवस्थित है। यह भारत और चीन को 30 किलोमीटर तक अलग करता है। हालांकि चीन का कहना है कि 'डोकलाम' नाम का उपयोग तिब्बत के चारागाह में करते थे। सन् 1960 से पहले तक भूटान के चरवाहे उनसे अनुमति लेकर ही इस क्षेत्र में जाते थे, लेकिन चीन के इस दावे का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिला है।

**वर्तमान डोकलाम विवाद : 2017**

वर्तमान में यह विवाद इसलिए उभर कर आया, क्योंकि चीन वन बेल्ट वन रोड (ओबीओआर) के तहत् सड़क का निर्माण तिब्बत से जुड़ने के लिए कर रहा है। चीन, रोड का निर्माण भारत, भूटान और चीन का जो तिराहा बिन्दु है, उसके एक क्षेत्र से करना चाहता है जो कि भूटान और भारत दोनों ही देशों की सुरक्षा के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

29 जून 2017 को पहले भूटान ने इस सड़क के निर्माण के खिलाफ चीन का विरोध किया, साथ ही भूटान ने अपनी सेना को हाई अलर्ट रख कर अपनी सीमा सुरक्षा को बढ़ा दिया। भारत ने भी इस सड़क निर्माण कार्य पर अपनी असहमति जताते हुए इसका विरोध किया है। भूटान का भारत के साथ कोई राजनयिक संबंध नहीं है अपितु मैत्रियी संबंध है। भूटान ने इस चीनी आक्रमण के खिलाफ भारत से मदद की मांग भी की। भारत की असहमति चीन को अच्छी नहीं लगी है, जिस वजह से यह विवाद उत्पन्न हुआ।

भारत और चीन में विवाद का मुख्य कारण यह है कि भारत को पूर्वोत्तर से जोड़ने वाला चिकेन नेग का हिस्सा सिलीगुड़ी कोरिडोर चुंबी वैली से मात्र 100 किलोमीटर की दूरी पर है। साथ ही चायना ने रोड़ निर्माण करते हुए चुंबी वैली से डोकलाम तक अपनी पहुँच बनाई है, उससे चीन के पड़ोसी, देश के प्रति आक्रामक होते है, उससे भारत की सुरक्षा को खतरा हो सकता हैं भारत अब सन् 1962 में हुये भारत–चीन युद्ध की हार के इतिहास को नहीं दोहराना चाहता है, इसलिए अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इस निर्माण कार्य का कड़ा विरोध किया।

16 जून, 2017 को शुरू हुआ भारतीय सेना और चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के बीच गतिरोध, 74 दिनों तक जारी रहा और 28 अगस्त, 2017 को समाप्त हुआ। दो एशियाई परमाणु शक्तियों की सेनाओं के बीच गतिरोध तब उभरा जब चीन ने विवादित क्षेत्र में यथास्थिति को, भारत के लिए बदलने की कोशिश की। पीएलए सैनिक बुलडोजर और खोदक मशीन के साथ पहुँचे और उत्खनन शुरू कर दिया और भारतीय राज्य सिक्किम की सीमा के पार, चीन और भूटान के बीच विवादित क्षेत्र में एक उच्च पर्वतीय सड़क का निर्माण शुरू कर दिया। सड़क के निर्माण का विरोध भूटान की सेना ने किया था लेकिन पीएलए सैनिको ने भूटान के सैनिकों की आपत्तियों पर ध्यान न देते हुये उन्हे वापस धकेल दिया।

अतः भूटान की ओर से भारतीय सैनिको ने 18 जून 2017 को सीमा पार की और विवादित क्षेत्र में निर्माण कार्य को अवरूद्ध कर दिया। चीन ने भारतीय हस्तक्षेप पर आपत्ति जताई और परिणामस्वरूप, विवादित क्षेत्र से भारतीय सैनिकों की वापसी की मांग की। जैसा कि भारत ने ऐसा करने से इंकार कर दिया, परिणामस्वरूप बीजिंग ने नई दिल्ली को निराश करने और दबाब में लेने के लिए उसके खिलाफ मनोवैज्ञानिक युद्ध की शुरूआत कर दी जिससे दो एशियाई पड़ौसी देशों के बीच 'छोटे युद्ध' की संभावना बन गयी। दोनों पक्षों ने हाथा–पायी और तनाव का सामना किया और अन्ततः राजनयिक समाधान की

परिणिति हुयी जिसमें दोनों पक्ष, बलों की वापसी पर सहमत हो गये।

**भारत चीन सैन्य गतिरोध की समाप्ति**

यद्यपि भारत और चीन के बीच सैन्य गतिरोध ने दोनों देशों में सैन्य संघर्षो की चिंता पैदा कर दी थी, फिर भी इसे 28 अगस्त, 2017 को समाप्त कर दिया गया, क्योंकि दोनों पक्ष अपनी सेनाओं को पूर्व गतिरोध की स्थिति में वापस लेने के लिए सहमत हो गये थे। भारत के विदेश मंत्रालय ने 28 अगस्त, 2017 को कहा था कि भारत और चीन के सीमावर्ती कर्मियों की डोकलॉम में वापसी मुहिम शीघ्रता से पूरी हो चुकी है। चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने भी घोषणा की कि सीमा का गतिरोध जो भारतीय अतिक्रमण के कारण था, समाप्त हो गया है जैसा कि इस क्षेत्र में भारत ने अपने सैनिको को वापिस कर लिया है।

वांग यी को भारतीय पक्ष से उम्मीद है कि डोकलॉम में द्विपक्षीय सैन्य गतिरोध से 'सबक' सीखना होगा और भविष्य में ऐसे गतिरोध की रोकथाम करनी होगी।

चीन में 3–4 सितम्बर 2017 को हुए ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में, चीन सेना की तुलना में भारतीय सेना की लाभप्रद स्थिति के साथ, 28 अगस्त, 2017 को बीजिंग और नई दिल्ली के बीच राजनयिक साधनों के माध्यम से सैन्य गतिरोध की समाप्ति हुयी।

**डोकलाम विवाद का भारत चीन संबंधो पर प्रभाव**

डोकलॉम में भारत–चीन द्विपक्षीय सैन्य गतिरोध और उसके बाद की समाप्ति का, भारत और अन्य देशों, विशेष रूप से जापान और आसियान देशों पर व्यापक राजनीतिक प्रभाव पड़ा है। इसके अलावा, इसने चीन और अन्य देशों को भारत के प्रति मजबूत और स्पष्ट संदेश दिया।

सबसे पहले, बातचीत के माध्यम से गतिरोध की समाप्ति ने बीजिंग के सापेक्ष नई दिल्ली ने एक नैतिक, सामरिक और कूटनीतिक जीत हासिल की।

डोकलाम विवाद के फलस्वरूप भारत के कूटनीतिक कौशल की प्रभावशीलता को दिखाया। बीजिंग ने इस मुद्धे पर भारत से इस तरह की मजबूत प्रतिक्रिया और दृढ़ पुशबैक की उम्मीद नहीं की थी। चुंकि भारत क्षेत्रीय विवादित हिस्से का प्रत्यक्ष हिस्सा नहीं था और यह विवाद चीन और भूटान की बीच था।

जिस तरह प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सेना और कूटनीतिज्ञों ने डोकलाम प्रकरण पर चीन को फटकार लगाई इससे दुनिया की नजरों में यह संदेश गया कि भारत केवल अपने हित के लिए नहीं बल्कि अपने पड़ौसी देशों की रक्षा हेतु भी तत्पर रहता है।

जब चीन ने अपने मीडिया के माध्यम से ग्लोबल टाइम्स सिन्हुआ न्यूज एजेंसी, चायना डेली और अन्य के माध्यम से मनोवैज्ञानिक युद्ध की शुरूआत की, चीन के विदेश और रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ताओं ने भारत के खिलाफ वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए धमकी देने, निराश करने और दबाव बनाने के लिए आक्रामक भाषा का इस्तेमाल किया। फिर भी, भारत ने चीन द्वारा इसके विरूद्ध शुरू किए गए मनोवैज्ञानिक युद्ध के बारे में परेशान न होकर बातचीत के जरिए गतिरोध को हल करने के अपने दृढ़ संकल्प को दिखाकर एक 'मापित' और संतुलित प्रतिक्रिया दी।

दो एशियाई महाशक्तियों (चीन–भारत) के बीच तनातनी पर महाद्वीप के दूसरे देशों की भी नजरे थी। खास तौर पर उन देशों की, जिनका क्षेत्रीय या समुद्री सीमा को लेकर चीन के साथ विवाद है। इस टकराव से यही संदेश निकला है कि चीन की विस्तारवादी महत्वाकांक्षा को रोका जाना मुमकिन है।

इस गतिरोध ने एशियाई महाद्वीप में चीन की विस्तारवादी और एकतरफा डिजायनों को भी उजागर किया।

भारत के खिलाफ चीन के मनोवैज्ञानिक युद्ध ने उसकी छवि को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कमजोर कर दिया।

चीन के साथ भूटान की भूमि पर हुए डोकलाम सीमा विवाद में भारत की भूमिका से वैश्विक मंच पर यह संदेश गया कि भारत ऐसा देश है जो अपनी बात से पीछे नहीं हटता है। अमेरिका भी कई बार धमकी देकर पीछे हट जाता है लेकिन डोकलाम मामले में भारत का अडिग रवैया दुनिया के देशों ने देखा।

डोकलाम विवाद के फलस्वरूप भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधो में गिरावट आई।

चीन ने भूटान जैसे छोटे पड़ौसी देशो के हितो की रक्षा के लिए, चीन के साथ अपने बढ़ते संबंधो को जोखिम में डालते हुए, भारत के हस्तक्षेप की उम्मीद नहीं की थी। अगर चीन भारतीय उत्पादों के खिलाफ अपनी गैर–टैरिफ बाधाओं को कम कर देता है या उसे हटा देता है तो दोनो देशों को द्विपक्षीय आर्थिक और वाणिजियक सहयोग में पूर्ण लाभ हो सकता है। द्विपक्षीय व्यावसायिक संबंधो की तीवृ वृद्धि के लिए गतिरोध अच्छा नहीं था।

गतिरोध के फलस्वरूप भारत के अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो में खुद को जिम्मेदार, निर्णायक और विश्वसनीय अभिनेता के रूप में स्थापित किया है। नई दिल्ली ने इस गतिरोध को सुलझाने हेतु एक परिपक्व और निर्णायक दृष्टिकोण अपनाया जब बीजिंग ने तथ्यों को विकृत करके और उन्हे 1962 से ज्यादा गंभीर परिणामों की धमकी देकर भारत के खिलाफ मनोवैज्ञानिक युद्ध शुरू किया था।

भारत के रूख ने, नई दिल्ली और थिंपु के बीच द्विपक्षीय संबंधो को मजबूत किया है। भारत के रूख ने इसके पड़ौसी और विस्तारित पड़ौस में नई दिल्ली और थिम्पू के बीच मजबूत संबंधो के अलावा एक विश्वसनीय साथी के रूप में कद को बढ़ाया है।

डोकलाम विवाद के फलस्वरूप भारत का एशियाई देशों के साथ सहयोग मजबूत हुआ है। एशियाई देशों ने चीन की बढ़ती ताकत की आशंका से सावधान होते हुए 'डोकलाम मुद्दे' को एक वरदान के रूप में देखा।

डोकलाम विवाद जैसी घटनाओं को रोकने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैः–

1. बिना किसी देरी के इस मुद्दे को सुलझाने हेतु भारत और चीन के मध्य एक हॉटलाइन स्थापित की जानी चाहिए।

2. बॉर्डर के प्रश्न पर स्थायी प्रतिनिधि के बीच चल रही वार्ताओं का जल्द से जल्द निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए।
3. विवाद की समाप्ति के लिए तीनों देशों के नेताओं के बीच शिखर स्तर की वार्ता आयोजित की जानी चाहिए।

**निष्कर्ष**

इस मुद्दे पर भारत को अपना रूख स्पष्ट करते हुए इस पर दृढ़ रहना चाहिए। लेकिन यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि छोटे सीमा विवाद भारत के लिए लाभदायक नहीं है।

अभी भारत को एलएसी की तत्काल सीमा नियमों का पालन करते हुए इस समस्याका समाधान चीन के राजनैतिक और सैन्य अधिकारियों के साथ भविष्य की बैठकों के जरिए निकालना चाहिए।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि फिलहाल डोकलाम विवाद का कूटनीतिक समाधान न केवल भारत व चीन अपितु विश्व के अन्य देशों के लिए भी शांति प्रदान करने वाला है परन्तु चीन के रवैये को देखते हुए यह आशंका निरर्थक नहीं है कि वह शीघ्र ही पुनः सीमा विवाद को तूल दे। अतः चीन से सजग रहने की आवश्यकता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. *राजस्थान पत्रिका 21.07.2017 पृ.4*
2. *डॉ. कुमार सुनील ''डोकलाम पठार पर भारत–चीन सैन्य गतिरोध और इसका रणनीतिक प्रभाव'' वर्ल्ड फोक्स जनवरी 2018, अंक 70*
3- *डोकलामः कूटनीति के जरिए भारत ने चीन को ऐसे किया चित NBT, 29 August, 2017*
4- *http:/www.indrastra.com/2017/07/china's New–Assertiveness.Doka-La-Face-off.003-07-2017*
5- *http:/timesofindia.indiatimes.com/india/bhutan-rejects.beijings-claim-that-doklam-belongs-to china/articleshaw/60001311. (11)*
6- *भारत–भूटान मैत्री संधि http:/idsa.in/resources/doucuments/ind-Bhutan friendshiptreaty. 2007*
7- *भारत भूटान और चीन के बीच डोकलाम विवाद https://www. deepawali.com.in septmeber. 5, 2017.*
8. *क्रॉनिकल मेग्जीन सितम्बर , 2017*
9. *द हिन्दू न्यूज पेपर, 31 अगस्त, 2017*